2.3.4

2.3.4 संस्थान शिक्षण की गुरुकुल पद्धति/पाठशाला/पारंपरिक प्राच्य अध्ययन पद्धति **(टीओएलएस)/गुरुकुल/शास्त्रपीठ/संस्कृत और संस्कृत ज्ञान प्रणाली पर अंतःविषय अनुसंधान को प्रोत्साहित करता है।**

Institution encourages the Grurukula method of teaching/ Pathashalas/ Traditional Oriental Learning System (TOLS)/ Gurukula/ Shastrapeethas/ Interdisciplinary Research on Sanskrit and Sanskrit knowledge system.

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय **शिक्षण की गुरुकुल पद्धति/पाठशाला/पारंपरिक** प्राच्यअध्ययनपद्धति **(टीओएलएस)/गुरुकुल/शास्त्रपीठ/संस्कृत और संस्कृत ज्ञान प्रणाली पर अंतःविषय अनुसंधान को प्रोत्साहित करता है।** यहाँ के सभी पाठ्यक्रम अनुसंधान विषय के विस्तारक है। यह विश्वविद्यालय आधुनिक अध्ययन पद्धति के साथ गुरुकुल पद्धति का भी आश्रयण करता है। इस विश्वविद्यालय में शास्त्रों का अध्ययन-अध्यापन परम्परागत प्राच्याधिगम पद्धति द्वारा किया जाता है। किन्हीं विषयों के सम्यक् ज्ञान के लिए उनके प्रायोगिक ज्ञान की आवश्यकता होती है अत: विश्वविद्यालय ने ऐसी व्यवस्था भी की हुई है जिससे विद्यार्थी प्रयोग द्वारा ज्ञान का सम्यगवबोध कर सके। जैसे ज्योतिष शास्त्र के प्रायोगिक ज्ञान-प्राप्ति के लिए वेधशाला और वेधयन्त्रालय की व्यवस्था है। मीमांसा के यज्ञ प्रकरण का आश्रयण करके वेदविभाग में यज्ञशाला की व्यवस्था भी है तथा साहित्य विभाग में भी संगीत के ज्ञान के लिए संगीत के सभी उपकरण उपलब्ध है। विश्वविद्यालय के पाठयक्रम में पढाए जाने वाले शास्त्रीय विषय ये हैं-

१. ऋग्वेद
२. शुक्ल यजुर्वेद
३. कृष्ण यजुर्वेद
४. सामवेद
५. अथर्ववेद
६. वेद नैरुक्त प्रक्रिया
७. पौरोहित्य
८. नव्य व्याकरण
९. प्राचीन व्याकरण
१०. गणित
११ फलित ज्योतिष
१२. सिद्धान्त ज्यौतिष

१३. धर्मशास्त्र
१४. साहित्य
१५. पुराणेतिहास
१६. प्राचीन राजशास्त्रार्थशास्त्र
१७. प्राचीन न्यायवैशेषिक
१८. नव्य न्याय
१९. पूर्व मीमांसा
२०. शङ्कर वेदान्त
२१. रामानुज वेदान्त
२२. मध्ववेदान्त
२३. निम्बार्क वेदान्त
२४. गौडीय वेदान्त
२५. वल्लभ वेदान्त
२६. रामानन्द वेदान्त
२७. शक्ति विशिष्टाद्वैत वेदान्त
२८. दर्शनम्
२९. तुलनात्मक दर्शन
३०. सांख्य-योग
३१. आगम
३२. योगतन्त्र
३३. तुलनात्मक धर्म
३४. बौद्ध दर्शन
३५. जैन दर्शन
३६. प्राकृत एवं जैनागम
३७. पालि
३८. संस्कृत विद्या

इन पाठ्यक्रमों में निर्दिष्ट शास्त्रीय विषयों के अन्तः शास्त्रीय विषय भी अनेक है। अतः इन विषयों में अन्तः शास्त्रीय विषय को आधार बनाकर किए गये शोध विषयों का किञ्चित् विवरण यहां प्रस्तुत किया जा रहा है-

१. धर्मशास्त्र विभाग के शोधछात्र प्रिंसशर्मा ने वेदविभाग के सहायकाचार्य डॉ. विजय कुमार शर्मा के निर्देशन में "धर्मशास्त्रदृष्ट्या गीतायाः परिशीलनम्" इस विषय पर सन् २०२२ में शोधकार्य किया।

२. धर्मशास्त्र विभाग के अनुसन्धाता प्रशान्त शेखर मिश्र ने डॉ. विजय कुमार शर्मा के निर्देशन में "वैदिक धर्मे सम्प्रदायप्रबोधिनी उच्चारणपरम्परानुशीलनम्" इस विषय पर सन् २०२३ में अपना शोधकार्य पूर्ण किया।

३. धर्मशास्त्र विभाग के शोधार्थी पशुपतिनाथ मिश्र ने डॉ. सत्येन्द्र कुमार यादव के निर्देशन में "मनुस्मृतिगततिङन्तपदसमीक्षणम्" इस विषय पर सन् २०२४ में अपना शोधकार्य किया।

४. धर्मशास्त्र विभाग के शोध छात्र अशोक कुमार पाण्डेय ने वेदविभाग के डॉ. सत्येन्द्र कुमार यादव के निर्देशन में "मनुस्मृतेः भारतीय संविधानस्य च व्यवहारस्वरूप समीक्षणम्" इस विषय पर सन् २०२४ में शोधकार्य किया।

५. तुलनात्मक धर्म दर्शन विभाग की शोधच्छात्रा कविता कुमारी ने न्यायवैशेषिक विभाग के डां. कुञ्जबिहारी द्विवेदी के निर्देशन में "सामकालिक भारतीयदर्शने वेदान्तप्रभाव परिशीलनम्" इस विषय पर सन् २०२३ में अपना शोधकार्य पूर्ण किया।

६. तुलनात्मक धर्म दर्शन विभाग के शोधच्छात्र अजय कुमार मौर्य ने न्याय वैशेषिक विभाग के डॉ. कुञ्जबिहारी द्विवेदी के निर्देशन में "प्रतीत्यसमुत्पाद-सिद्धान्तस्य दार्शनिकानुशीलनम्" इस विषय पर सन् २०२२ में अपना शोधकार्य पूर्ण किया।

इस विश्वविद्यालय में ऐसा प्रकल्प भी आरम्भ किया गया है, जिसमें विभिन्न संस्थाओं के विद्वान् आकर अपना वक्तव्य देते हैं, जिससे छात्रगण विषयों में निहित गूढतत्त्व को जानकर उसमें शोधविषयक नवीन दृष्टि को अपनाकर लाभान्वित होते हैं।
नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति अन्त: शास्त्रीय अथवा तत्सम्बद्ध विषयों पर शोधकार्यों के लिए प्रोत्साहित करती है, अतः विश्वविद्यालय ने भी तदनुरूप अपने पाठ्यक्रम की संरचना की है।

प्राचीन परम्परा के गुरुकुलों में आश्रियमाण विधियाँ भी अध्ययन-अध्यापन में यहाँ प्रयुक्त होती है। ये विधियाँ अन्तःशास्त्रीय विषयों को जटिल से सरल बनाती हैः-

१. **वादविधि-** वाद से तत्व का ज्ञान होता है। शास्त्रीय तथा दर्शनग्रन्थों में प्रमेय विचार वाद के द्वारा ही प्रतिपादित किया गया है। अत: वेदान्त, न्याय, व्याकरण, मीमांसा,

बौद्ध, जैन, सांख्य, योग आदि दर्शनों के पाठ्य में अध्यापकगण इस विधि का आश्रय लेते हैं। वाक्यार्थपरिषद् में अध्यापक विशेषतः इस विधि के द्वारा ही प्रमेय को समझाते है।

२. **दृष्टान्त विधि**- शब्दशास्त्र में शब्दनित्यत्व, विवर्तवाद, वेदान्त में सृष्टि-प्रक्रिया, भ्रम, साहित्य में शब्दशक्ति, मीमांसा में विभिन्न प्रमेय तथा अनेक विषयों का पठन-पाठन इस विधि के द्वारा कराया जाता है। दृष्टान्त देने से विषय छात्रों को सरलता से समझ में आ जाता है।

३. **अध्यारोप अपवाद विधि**- सोपान क्रम से अध्यापन। स्थूल से सूक्ष्म की ओर, अज्ञात से ज्ञात की ओर। इस प्रकार के विषय का ज्ञान कराने के लिए इस विधि को अपनाया जाता है। अद्वैत वेदान्त में ब्रह्म के स्वरूप कथन में इसका प्रयोग किया गया है।

४. **व्याख्यान विधि**- साहित्य में नैषधीयचरित, सांख्य में सृष्टिप्रक्रिया तथा इतर शास्त्रों के विषयावबोध कराने के लिए इसका उपयोग होता है। यह विधि अत्यन्त प्रसिद्ध है।

५. **कथाविधि**- प्रतिपादित विषय से सम्बन्धित अनेक कथाएं होती है। काव्य, पुराण, उपनिषद् एवं भगवद्गीतादि के पाठन में इसका प्रयोग होता है।

६. **आदर्शवाचन विधि**- पुराण-वेदमन्त्र-काव्यादि के पाठन में इस विधि का प्रचुरता से प्रयोग होता है।

७. **समस्या समाधान विधिः**- शास्त्रीय विषयों के पठन-पाठन में पहले शंका पुनः समाधान फिर शंका फिर समाधान इस क्रम से सिद्धान्त का स्थापन किया जाता है। विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों में अत्यन्त उपयोगी इस विधि का आश्रयण अधिकतर अध्यापकगण करते हैं।